1857 का विद्रोह

- 1857 क्रांति के पूर्व भी कुछ सैनिक विद्रोह होते रहे थे जो इस प्रकार है-

1857 के पूर्व सैनिक विद्रोह:

- 1764 बक्सर में मुनरों के अधीन सैनिक दस्ते से विद्रोह किया था।
- 1766 दोहरे भत्ते के नियंत्रण के मुद्दे पर क्लाइव के सैनिकों ने विद्रोह किया।
- 1806 वेल्लौर का सैनिक विद्रोह - इस विद्रोह को भड़काने का काम टीपू के पुत्र ने किया जो उस समय वेल्लौर के किले की जेल में बंद था।
- 1824-47 की पद्धति सैनिकों ने भत्ते के मुद्दे पर वर्मा युद्ध में जाने से इन्कार कर दिया।
- 1825 असम के तोपखाने के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।
- 1838 शोलापुर के सैनिकों ने भत्ते के मुद्दे पर विद्रोह कर दिया।
- 1844-64 IAK रेजीमेंट ने सिंध अभियान पर जाने से इन्कार कर दिया।
- 1849-50 पंजाब के विजय के पश्चात् 1850 ई0 में गोविन्दगढ़ नामक स्थान पर सैनिकों का विद्रोह हुआ।

1857 की क्रांति के कारण:

- विविध राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सैनिक व तात्कालिक कारणों से घटित हुई है जो इस प्रकार है।
- औपनिवेशिक शासन का स्वरूप ब्रिटिश हित में था। प्लासी के युद्ध के बाद निरन्तर भारत का शोषण होता रहा।
- भू-राजस्व नीति और औद्योगिक नीतियों ने भारत को ब्रिटिश साम्राज्य का मात्र आर्थिक उपनिवेश बना दिया था।
- डलहौजी की व्यपगत नीति और वेलेजली की सहायक संधि द्वारा अंग्रेजी विस्तार की नीति ने भारतीय को असंतुष्ट कर दिया।
- 1856 के 'धार्मिक निर्योग्यता अधिनियम (Religions disability) द्वारा ईसाई धर्म ग्रहण करने वाले लोगों के अपनी पैतृक सम्पत्ति का हकदार माना गया साथ ही उन्हें नौकरियों में पदोन्नति शिक्षण संस्थाओं में सुविधा प्रदान की गई।
- चर्बी लगे कारतूसों के प्रयोग को 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण माना जाता हैं। केनिंग सरकार ने 1857 में सैनिकों ने प्रयोग के लिए ब्राउन बैस के स्थान पर एनफील्ड रायफल का प्रयोग शुरू कर करवाया।

1857 क्रांति घटनाक्रम:

- कुछ इतिहासकारों के अनुसार अजीमुल्ला ने बिठूर कानपुर में नाना साहब के साथ मिलकर विद्रोह की योजना को अंतिम रूप देते हुए 31 मई 1857 को क्रांति का दिन निश्चित किया था। क्रांति के प्रतीक के रूप में कमल और रोटी को चुना गया।
- चर्बी लगे कारतूसों के प्रयोग से चारों तरफ व्याप्त असंतोष ने विद्रोह के लिए निर्धारित तिथि से पूर्व ही विस्फोट को जन्म दे दिया। 29 मार्च 1857 को बैरकपुर की छावनी में घटी जहाँ मंगल पाण्डे नामक एक सिपाही ने चर्बी लगे कारतूस के प्रयोग से इंकार करते हुए अपने अधिकारी लेफ्टिनेंट बाग और लेफ्टिनेंट जनरल हयूसन की हत्या कर दी, यही से 1857 की क्रान्ति की शुरूआत मानी जाती है।
- मंगल पाण्डे उ०प्र० के तत्कालीन गाजीपुर (बलिया) जिले का रहने वाला था। वह बंगाल स्थित बैकरपुर छावनी की इनफैन्ट्री का जवान था। 8 अप्रैल 1857 को सैनिक अदालत के निर्णय के बाद मंगल पाण्डे को फांसी की सजा दे दी गई।
- 11 मई को विद्रोहियों ने दिल्ली पर अधिकार कर मुगल बादशाह बहादुर शाह द्वितीय को पुनः भारत का सम्राट और विद्रोह का नेता घोषित कर दिया।
- कानपुर में 5 जून 1857 को विद्रोह की शुरूआत हुई। यहां पर पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब (धोंधू पंत) ने विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया, जिसमें उनकी सहायता तात्या टोपे ने की। नाना साहब लगातार पराजयों को झेलते हुए अन्ततः नेपाल चले गये, जहां से वे जीवन की अंतिम सांस तक अंग्रेजों से लड़ते रहे।

- दिल्ली में 82 वर्षीय बहादुरशाह ने बख्त खाँ के सहयोग से विद्रोह का नेतृत्व प्रदान किया। 20 सितम्बर 1857 को बहादुरशाह ने हुमायूँ के मकबरे में अंग्रेज लेफ्टिनेंट डब्लू.एस.आर हडसन के समक्ष समर्पण कर दिया।
- कानपुर में 5 जून 1857 को विद्रोह की शुरूआत हुई। यहां पर पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब (धोंधू पंत) ने विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया, जिसमें उनकी सहायता तात्या टोपे ने की। नाना साहब लगातार पराजयों को झेलते हुए अन्ततः नेपाल चले गये, जहां से वे जीवन की अंतिम सांस तक अंग्रेजों से लड़ते रहे।
- दिल्ली में 82 वर्षीय बहादुरशाह ने बख्त खाँ के सहयोग से विद्रोह का नेतृत्व प्रदान किया। 20 सितम्बर 1857 को बहादुरशाह ने हुमायूँ के मकबरे में अंग्रेज लेफ्टिनेंट डब्लू.एस.आर हडसन के समक्ष समर्पण कर दिया।
- लखनऊ में 4 जून 1857 को विद्रोह की शुरूआत हुई। बेगम हजरत महल ने अपने अल्पायु पुत्र बिरजिस कादिर को नवाब घोषित किया तथा लखनऊ स्थित ब्रिटिश रेजिडेंसी पर आक्रमण किया। लखनऊ के बाद बेगम हजरत महल ने मौलवी अहमदुल्ला के साथ शाहजहांपुर में भी विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया वे शीघ्र पराजित हो गई और नेपाल चली गयी।
- झाँसी में 4 जून 1857 को रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में विद्रोह की शुरूआत हुई। जिसमें रानी ने वीरतापूर्वक युद्ध किया, परन्तु झांसी के पतन के बाद लक्ष्मीबाई ग्वालियर की ओर प्रस्थान कर गयी।
- ग्वालियर में तात्या टोपे के साथ विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया। अनेक युद्धों में अंग्रेजों को पराजित करने के बाद अंग्रेजी जनरल हयूरोज से लड़ते हुए 17 जून 1858 को वीरगति को प्राप्त हो गयी। लक्ष्मी बाई की समाधि ग्वालियर में स्थित है।
- 1857 के बरेली में विद्रोह का नेतृत्व खान बहादुर ने किया था।
- इलाहाबाद में 1857 के संग्राम का नेतृत्व मौलवी लियाकत अली ने किया था।
- कुंवर सिंह 1857 के विद्रोह में बिहार के प्रमुख नायक थे। कुंवर सिंह आरा में अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध में शामिल हुए थे। बिहार के जगदीशपुर के राजा कुंवर सिंह थे। इन्होनें क्रांतिकारियों को जगदीशपुर में नेतृत्व प्रदान किया था।
- 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों की सर्वाधिक सहायता करने वाला राजवंश ग्वालियर के सिंधिया थे।
- 1857 के विद्रोह के समय चित्तौड़ विद्रोह से अप्रभावित रहा।
- बिहार के दानापुर, पटना, आरा, मुजफ्फरपुर में तो विद्रोह सक्रिय था किन्तु मुंगेर क्षेत्र विद्रोह से अप्रभावित रह गया था।

विद्रोह के महत्वपूर्ण नेता व इनके क्षेत्र

स्थान	नेतत्वकर्ता
झांसी	रानी लक्ष्मी बाई
लखनऊ	बेगम हजरत महल
कानपुर	अजीमुल्लाह खां / नाना साहेब
फैजाबाद	मौलवी अहमद शाह
असम	मनी राम दीवान
इलाहाबाद	लियाकत अली
बरेली	खान बहादुर
दिल्ली	बहादुरशाह जफरबख्त

1857 के विद्रोह का परिणाम:

- 1857 के विद्रोह के तत्काल बाद 'ब्रिटिश क्राउन' ने कंपनी से भारत पर शासन करने के अधिकार वापस ले लिया। कंपनी के नियंत्रण हेतु स्थापित बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल और बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स को समाप्त कर दिया गया। 1 नवम्बर 1858 के घोषणा पत्र में महारानी विक्टोरिया ने भारतीय प्रशासन को ब्रिटिश ताज के नियंत्रण में लेने की घोषणा की थी।
- ब्रिटिश सरकार ने रियासत को हड़पने की नीति समाप्त कर दी थी।
- विद्रोह के बाद स्थापित पील कमीशन की रिपोर्ट पर सेना में भारतीयों की तुलना में यूरोपियों का अनुपा बढ़ा दिया गया।

विद्रोह की असफलता के कारण:

- विद्रोह की असफलता के विविध कारण थे, जिनमें एकता, संगठन और साधनों की न्यूनता प्रमुख कारण थे।
- विद्रोह न तो कोई सुनियोजित योजना थी न कार्यक्रम इसीलिए यह सीमित , असंगठित और स्थानीय होकर रह गया।
- विद्रोही नेताओं में राजनीतिक नेतृत्व, सैनिक अनुभव तथा सामाजिक दूर दृष्टि का अभाव था। उनमें से किसी को दिल्ली के पतन के परिणामों का आभास नहीं था और उनके द्वारा इसकी संयुक्त सुरक्षा के कोई उपाय नहीं किए गये।
- कम्पनी को लॉरेन्स बन्धु, निकलसन ऑउट्रम, हेवलॉक एडवर्ड जैसे योग्य व्यक्तियों की सेवाएं प्राप्त थी, वहीं भारत के बुद्धिजीवी वर्ग ने इस आंदोलन कोई रूचि नहीं ली।
- रणनीति और रण कौशल की दृष्टि से भी अंग्रेजी सेना भारतीय विद्रोहियों से बहुत आगे थी।
- विद्रोहियों के सीमित हथियार व संसाधन ब्रिटिश सेना के वृहद् संसाधनों से संघर्ष करने में विफल रहा था।
- भारतीय सिपाहियों में उद्देश्य की एकता में कमी ने भी विद्रोह को असफल बना दिया।

1857 के विद्रोह से सम्बन्धित महत्वपूर्ण पुस्तकें

पुस्तकें	रचयिता
First war of Indian independence	वी.डी. सावरकर
Eighteen fifty-seven	एस. एन. सेन
The great rebellion	अशोक मेहता
Sipoy mutiny and the revolt of 1857	आर.सी. मजूमदार

- भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का सरकारी इतिहासकार एस. एन. सेन थे। पहले सरकारी इतिहासकार का दायित्व आर. सी. मजूमदार को दिया गया था किन्तु उनकी सरकार के साथ थोड़ी अनबन हो गई अतः यह कार्य सुरेन्द्र नाथ सेन को दे दिया गया।
- रिबेलियन 1857 (Rebellion 1857) नामक पुस्तक पी. सी. जोशी ने लिखी थी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 1857 के विद्रोह के समय भारत का गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग था।
- क्रांति के समय बैरकपुर में ब्रिटिश कमांडिंग ऑफिसर "जॉन बेनेट हैरसे" था।
- विद्रोह के समय लार्ड कैनिंग ने इलाहाबाद को आपातकालीन मुख्यालय बनाया था।
- विद्रोह के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री विस्कॉन्ट पामर्स्टन
- 'तथाकथित प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम न प्रथम, न राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम था 1857 के विद्रोह के संबद्ध में यह कथन आर. सी. मजूमदार ने कहा था।
- सर जेम्स आउट्रम एवं डब्लू टेलर ने 1857 के विद्रोह को एक षड्यंत्र की संज्ञा दी।
- 1857 के विद्रोह को देखने वाले उर्दू कवि मिर्जा गालिब थे। सुप्रसिद्ध उर्दू शायर मिर्जा गालिब का मूल निवास आगरा था।

अन्य जन आंदोलन

ब्रिटिश विस्तार वादी नीति के कारण भारत के असंतुष्ट लोगों के द्वारा राजनीतिक, धार्मिक आंदोलन, जनजातीय आंदोलन, किसान आंदोलन, जमींदारों के आंदोलन होते रहे। जिसमें कुछ महत्वपूर्ण आंदोलन इस प्रकार है -

- **फकीर विद्रोह (1776-1777)** में शुरू हुआ। इसका नेतृत्व मंजनूमशाह ने किया। भवानी पाठक और देवी चौधरानी जैसे हिन्दू नेताओं ने इस आंदोलन की सहायता की।

- **सन्यासी विद्रोह (1770-1800 लगभग)** में यह विद्रोह बंगाल में हुआ। तीर्थ स्थलों की यात्रा पर लगे प्रतिबंध ने सन्यासियों को इतना क्षुब्ध कर दिया कि वे विद्रोह पर उतर आये। बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास आनन्द मठ में सन्यासी विद्रोह का उल्लेख मिलता है।
- **पागलपंथी विद्रोह 1813** में पागलपंथी संप्रदाय के नेता टीपू ने जमींदारों के विरूद्ध काश्तकारों के समर्थन में विद्रोह कर जमींदारों के गढ़ों पर आक्रमण कर दिया। 1833 में विद्रोह को कुचल दिया गया।
- **वहाबी आंदोलन (1820-70)** यह मूलतः मुस्लिम सुधारवादी आंदोलन था जो उत्तर पश्चित, पूर्वी तथा मध्य भारत में सक्रिय था। वहाबी आंदोलन मुस्लिम समाज को भ्रष्ट धार्मिक तौर तरीकों से मुक्त करने के लक्ष्य पर कार्य करता था। वहाबी आंदोलन के संस्थापक अब्दुल वहाब थे। भारत में इस आंदोलन को सैय्यद अहमद रायबरेली (1703-87) के कारण लोकप्रियता मिली। सैय्यद अहमद की मृत्यु के बाद पटना वहाबी आंदोलन का मुख्य केन्द्र बना। वहाबी आंदोलन के बारे में कहा जाता है कि यह विद्रोह 1857 के विद्रोह की तुलना में कहीं अधिक नियोजित व संगठित था।
- **कूका आंदोलन (1860-70)** पंजाब में कूका आंदोलन की शुरूआत भगत जवाहरमल के नेतृत्व में हुआ। 1862-72 के मध्य सरकार ने इसे कुचल दिया।
- **रामोसी विद्रोह (1822)** मराठा साम्राज्य के पतन के बाद उनके आश्रितों के द्वारा 1822 में विद्रोह किया गया। ब्रिटिश सरकार ने रामोसियों के विद्रोह को समाप्त करने के लिए उन्हें भूमि अनुदान दिया, साथ ही पहाड़ी पुलिस में नौकरी दी।
- **गड़कारी विद्रोह (1844)** यह विद्रोह कोल्हापुर महाराष्ट्र में हुआ। इसके नेता फोन्ड सावंत थे। शीघ्र ही सरकार ने विद्रोह का दमन कर दिया।
- **वेलुप्पी विद्रोह (1808-09)** यह विद्रोह त्रावणकोर केरल में हुआ। दीवान वेलुप्पी ने दीवान के पद छीने जाने व सहायक संधि द्वारा वित्तीय बोझ डालने के कारण विद्रोह किया। गोलियों से घायल वेलुप्पी की मृत्यु के बाद अंग्रेजी सेना ने उसे सार्वजनिक रूप से फांसी पर लटका दिया।
- **पाइक विद्रोह (1817)** यह विद्रोह उड़ीसा के खुर्दा यह नामक स्थान पर हुआ। इस विद्रोह को खुर्दा के राजा नेपाइकों के सहयोग से संगठित किया 'पाइक' लगान मुक्त भूमि का उपयोग करने वाले सैनिक थे। पाइक नेता जगबंधु के नेतृत्व में पाइक विद्रोहियों ने अंग्रेजी सेना को पराजित कर पुरी पर अधिकार कर लिया था।

जनजातीय (आदिवासी) विद्रोह

भारत में अनेक हिस्सों में रहने वाले आदिवासियों ने 19वीं सदी में संगठित होकर ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध कई छापामार लड़ाइयाँ लड़ी। आमतौर पर आदिवासी शेष समाज से अलग-थलग रहते थे, इनकी अलग आर्थिक व सांस्कृतिक व्यवस्था थी। औपनिवेशिक सरकार ने इन आदिवासी क्षेत्रों में हस्तक्षेप किया परिणाम स्वरूप विविध आन्दोलन हुए। जो इस प्रकार है-

- **पहाड़िया विद्रोहः** राजमहल की पहाड़ियों में स्थित जनजातियों का विद्रोह था। 1778 में इनके खूनी संघर्ष से परेशान अंग्रेजी सरकार ने समझौता कर इनके क्षेत्र को 'दामिनी कोल क्षेत्र' घोषित कर दिया।
- **खोंड विद्रोहः** 1837 से 1856 के बीच तमिलनाडु से लेकर बंगाल और मध्य भारत तक फैले जनजातियों ने विद्रोह किया। इस विद्रोह को चक्र बिसोई का नेतृत्व प्राप्त था।
- **कोल विद्रोहः** रांची सिंहभूमि, हजारी बाग पालामऊ और मानभूमि के पश्चिमी क्षेत्र में फैला था। विद्रोह का कारण आदिवासियों की भूमि को उनके मुखिया मुण्डों से छीनकर मुसलमान तथा सिक्ख किसानों को दे दिया गया। 1832 से 1837 तक यह विद्रोह चलता रहा।
- **संथाल विद्रोह (1855 - 56)** यह विद्रोह मुख्यतः भागलपुर से राजमहल के बीच केन्द्रित था । ये आदिवासी गैर आदिवासियों को दिक् नाम से सम्बोधित करते थे। संथाल विद्रोह को सिद्धू और कान्हू नामक दो संथालों का नेतृत्व प्राप्त हुआ। सरकार को संथालों के विद्रोह को कुचलने के लिए दस हजार का इनाम घोषित किया। सिद्धू और कान्हू को पकड़कर मार दिया गया।
- **भील विद्रोह** राजस्थान के बांसवारा, सूंठ और डूंगरपुर क्षेत्रों में भीलों के द्वारा विद्रोह किया गया। 1913 तक यह आंदोलन इतना सशक्त हो गया कि विद्रोहियों ने 'भील राज' की स्थापना हेतु प्रयास शुरू कर दिया। ब्रिटिश सरकार के कठिन प्रयासों द्वारा विद्रोह को दबा दिया गया।
- **मुण्डा विद्रोह (1893 - 1900)** बिरसा मुण्डा के नेतृत्व में (1893–1900) यह विद्रोह हुआ।

- **तानाभगत आंदोलनः** प्रथम विश्व युद्ध के बाद छोटा नागपुर (बिहार) में 1914 ई0 में आंदोलन प्रारम्भ हुआ। इस आंदोलन का जतराभगत बलराम भगत देवमेनिया भगत ने नेतृत्व किया।
- **चेंचू आंदोलनः** आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले में 1920 में असहयोग आंदोलन के समय शक्तिशाली जंगल सत्याग्रह के रूप में शुरू हुआ। दिसम्बर 1927 में गांधी जी ने भी इस क्षेत्र का दौरा किया।
- **रम्पा विद्रोहः** आंध्र प्रदेश के गोदावरी जिले के उत्तर में स्थित 'रम्पा' क्षेत्र में यह विद्रोह हुआ। आदिवासियों का यह विद्रोह साहूकारों के शोषण और वन कानूनों के विरूद्ध हुआ । 1922-24 के बीच रम्पा विद्रोह के नेता अल्लूरी सीताराम राजू थे। 1924 में सीताराम राजू की हत्या कर विद्रोह को कुचल दिया गया।
- **वन या जंगल सत्याग्रहः** यह मुख्यत महाराष्ट्र, मध्यप्रान्त कर्नाटक के गरीब आदिवासियों द्वारा चलाया गया। वन सत्याग्रह के दौरान गंजन, कोई जैसे नेताओं ने लगान न अदा करने के लिए अभियान चलाया।
- **अहोम विद्रोहः** असम क्षेत्र में 1828 में गोमचर कुंवर के नेतृत्व में विद्रोह किया। सरकार ने अहोम को शांत करने के लिए समझौता किया।
- **नागा आंदोलनः** इस आन्दोलन की शुरूआत युवा रोंगमेई जदोनांग ने किया। 29 अगस्त 1931 को सरकार ने जदोनांग को फांसी दे देने के बाद इस आंदोलन को 17 वर्षीय नागा महिला गेडिनलियू ने अपना नेतृत्व प्रदान किया।

किसान आंदोलन

औपनिवेशिक शोषणकारी व्यवस्था, साहूकारों की सूदखोरी और अंग्रेज बगान मालिकों के उत्पीड़न के विरोध में भारत में किसान आंदोलन होते रहे है। जो कुछ इस प्रकार है-

- **नील विद्रोहः** यूरोप के बड़े नील बगान मालिक पूर्वी भारत में किसानों को अपनी जमीन के कुछ भाग पर अलाभकारी नील की फसल उगाने के लिए बाध्य करते थे। अत्यन्त उत्पीडित किसानों ने 1860 में नील का उत्पादन न करने का आंदोलन चलाया। नील आंदोलन में किसानों को बंगाल के बद्धिजीवियों, प्रेस माध्यम और धर्म प्रचारकों का भी व्यापक समर्थन मिला। इस मामले में ₹हिन्दू पैट्रियाट₹ के संपादक हरिश्चन्द्र मुखर्जी की बड़ी भूमिका रही। दीनबन्धु मित्र ने अपने नाटक 'नील दर्पण' में नील किसानों की स्थिति का सटीक चित्रण किया है।
- **एका आंदोलनः** उत्तर प्रदेश में प्रारम्भ हुआ 1922 के प्रारंभ तक आंदोलन हरदोई, बाराबंकी और सीतापुर जिलों में उभरा। इस आंदोलन का मुख्य मुद्दा लगान की उगाही का था। मदारी पासी इस आंदोलन से जुड़े थे।
- **पाना कृषक विद्रोहः (1872-73)** पाबना जिला पूर्वी बंगाल के युसुफ शाही परगना में फैला था। जो वर्तमान में बांग्लादेश के अंतर्गत है। यह विद्रोह जमींदारों के शोषण के खिलाफ था । इस आंदोलन के परिणाम स्वरूप 'बंगाल प्रजास्वत्व 1885 पास हुआ।
- **मोपला विद्रोहः** मोपला केरल के मालाबार के निवासी थे। 1921 में कृषिजन्य असन्तोष के कारण विद्रोह कर दिया। बाद में इस विद्रोह ने साम्प्रदायिक स्वरूप धारण कर लिया।
- **चम्पारन नील सत्याग्रहः** चम्पारन (बिहार) में किसानों ने बागान मालिकों से इकरारनामा के अनुसार अपनी भूमि के 3/ 20वें हिस्से पर नील की खेती करते थे। इसे तिनकठिया पद्धति कहते है। किसान इकरारनामें से मुक्ति चाहते थे क्योंकि बाजार में रासायनिक रंगों के आ जाने के बाद यह घाटे का सौदा हो गया था। ऐसे में राजकुमार शुक्ल के आवाहन पर महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्यागृह किया गया। परिणामतः बागान मालिकों ने तिनकठिया पद्धति समाप्त कर दी।
- **खेड़ा सत्याग्रहः** गुजरात के खेड़ा जिले में फसल खराब होने के बाद भी लगान की माँग की इन्दुलाल याज्ञनिक तथा वल्लभ भाई पटेल जैसे नेताओं के साथ गांधी जी ने आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया जो सफल रहा।
- **बारदोली सत्याग्रहः** स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 1928 में गुजरात में यह आंदोलन हुआ। इसका नेतृत्व सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया। उस समय प्रांतीय सरकार ने किसानों के लगान में 30% की वृद्धि कर दी थी पटेल ने इस लगान वृद्धि का जमकर विरोध किया । बारदोली सत्याग्रह में महात्मा गांधी ने वल्लभ भाई पटेल सरदार उपाधि उनकी संगठन क्षमता के कारण दी।

- **तिभागा आंदोलन:** यह बंगाल में जोतदारों के विरूद्ध बटाईदारों का आंदोलन था, जिसमें बटाईदारों की मांग थी कि फसल का तिभाग 1/3 उन्हें दिया जाये। 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बंगाल के किसानों का यह सबसे प्रबल आंदोलन था जो स्वतंत्रता प्राप्ति तक चलता रहा।
- **अखिल भारतीय किसान सभा** अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना के पूर्व किसान आंदोलन और सभाएं बिखरी हुई थी। जैसे 1918 में स्थापित संयुक्त प्रांत किसान सभा ने 1920-21 में अवध के कुछ जिलों में एक प्रबल आंदोलन चलाया। 1928 में आंध्र प्रदेश में प्रान्तीय रैय्यत सभा की स्थापना की गई। इसी प्रकार 1929 में स्वामी सहजानंद सरस्वती ने बिहार किसान सभा की स्थापना की। यह सारी सभाएं एक-दूसरे से अलग-अलग थी सविनय अवज्ञा आंदोलन के उपरांत अप्रैल 1936 में लखनऊ में अखिल भारतीय किसान सभा का गठन किया गया। इसके प्रथम अध्यक्ष स्वामी सहजानंद थे। लखनऊ में ही अखिल भारतीय किसान सभा का प्रथम सत्र हुआ।

किसान आन्दोलनों से सम्बद्ध महत्वपूर्ण तथ्य

- भारत वर्ष का सर्वप्रथम किसान आंदोलन बिजौलिया - किसान आंदोलन था। जो 1897 में राजस्थान में प्रारम्भ हुआ। यह आंदोलन इतिहास का सबसे लम्बा चला तथा यह अहिंसक आंदोलन था जो 44 वर्षों तक चलता रहा, 1941 में समझौते के साथ समाप्त हुआ।
- इंद्र नारायण द्विवेदी, गौरी शंकर मिश्र एवं मदन मोहन मालवीय यू०पी० किसान सभा 1918 ई० से संबद्ध थे।
- 'नाई - धोबी बंद' सामाजिक बॉयकाट का एक स्वरूप 1919 में किसानों द्वारा प्रतापगढ़ जिले में चलाया गया था।

महत्वपूर्ण किसान नेता और संबंद्ध क्षेत्र

व्यक्ति	संबद्ध क्षेत्र
सहजानंद	सरस्वती बिहार
खुदाई	खिदमतगार एन.डब्लू.एफ.पी
स्वामी	रामानंद हैदराबाद
अब्दुल हमीद खां	दक्षिणी असम
बंगाल प्रजा पार्टी	फजलुल हक
स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती	बाकारत संघर्ष
एन. जी. रंगा	भारतीय किसान विद्यालय

आधुनिक भारत में शिक्षा विकास

- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने शासन के प्रारम्भिक दिनों में भारत में शिक्षा के प्रसार के लिए प्रयास नहीं किया लेकिन इन दिनों उदार अंग्रेजों ईसाई मिशनरियों और उत्साही भारतीयों ने इस दिशा में प्रयास किया।
- 1781 में गवर्नर-जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता मदरसा की स्थापना की जिसमें अरबी व फारसी का अध्ययन होता था।
- 1784 में हेस्टिंग्स के सहयोगी सर विलियम जोंस ने 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना की जिसने प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्ययन हेतु महत्वपूर्ण प्रयास किये।
- ब्रिटिश रेजीडेण्ट जोनाथन डंकन द्वारा 1791 में वाराणसी में हिन्दू कानून और दर्शन हेतु संस्कृत कॉलेज की स्थापना की गई।
- 1800 ई0 में लार्ड वेलेजली द्वारा कम्पनी के असैनिक अधिकारियों की शिक्षा के लिए फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की गई।
- राजा राममोहन राय, डेविड हेअर और सर हाईड ईस्ट ने मिलकर कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की।
- ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा भारत में शिक्षा के क्षेत्र में वास्तविक प्रयास 1813 में किया गया।

- 1813 चार्टर एक्ट में गवर्नर जनरल को अधिकार दिया गया कि वह एक लाख रूपये साहित्य के पुनुरूद्धार और उन्नति के लिए और भारत में स्थानीय विद्वानों को प्रोत्साहन देने के लिए तथा अंग्रेजी प्रदेशों के वासियों में विज्ञान के आरम्भ और उन्नति के लिए खर्च करें।
- प्राच्य शिक्षा समर्थक दल के नेता एच० टी० प्रिंसेज तथा एच० एच० विल्सन थे। इनका मानना था कि भारत में संस्कृत और अरबी के अध्ययन को प्रोत्साहन दिया जाए। वही मुनरो और एलफिंस्टन ने पाश्चात्य शिक्षा को स्थानीय देशी भाषा में देने की वकालत की। प्राच्य - पाश्चात्य विवाद को उग्र होते देख तत्कालीन ब्रिटिश भारत के गर्वनर जनरल विलियम बैंटिक ने काउंसिल के विधि सदस्य लार्ड मैकाले को लोक शिक्षा समिति (बंगाल) का प्रधान नियुक्त कर उन्हें भाषा संबन्धी विवाद पर अपना विवरण पत्र प्रस्तुत करने को कहा। 2 फरवरी 1835 को मैकाले ने अपना स्मरणार्थ लेख प्रस्तुत किया, इन्होनें आंग्ल भाषा साहित्य की प्रशंसा की यही से आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव पडी।
- भारत की शैक्षणिक नीति में 'फिल्टरेशन थ्योरी' के प्रतिपादक लार्ड मैकाले थे। 1854 में चार्ल्स वुड डिस्पैच ने भारत में भावी शिक्षा के लिए वृहद् योजना तैयार की गयी। इसे (भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा) कहा गया। इसमें महिला शिक्षा को प्रोत्साहन दिया गया।
- कलकत्ता, बम्बई, मद्रास में तीन विश्वविद्यालय स्थापित करने की योजना भी वुड डिस्पैच में समाहित था। भारत में प्रथम तीन विश्वविद्यालय (कलकत्ता, मद्रास, बंबई) की स्थापना 1857 में की गयी।
- (1882 - 1883) में स्थापित हंटर कमीशन में प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के उपाय सुझाये गये थे। शिक्षा के क्षेत्र में निजी प्रयत्नों को प्रोत्साहन मिला।
- 1902 में रैले कमीशन की स्थापना की गयी 1902 में थॉमस रैले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग की स्थापना की गई।
- 1917 में शिक्षा के क्षेत्र में डॉ माइकल सैडलर के नेतृत्व में कलकत्ता विश्वविद्यालय की समस्याओं के अध्ययन हेतु सैडलर आयोग की स्थापना की गयी। सैडलर आयोग के सुझावों पर उ0 प्र0 में एक बोर्ड ऑफ सेकेंडर एजुकेशन की स्थापना की गयी।
- 1937 में 'अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन' में गाँधी जी के द्वारा शिक्षा पर प्रस्तुत योजना को मिलाकर वर्धा योजना प्रस्तुत की गयी। जिसमें 7 से 14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क एंव अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था, मातृभाषा में शिक्षा की व्यवस्था, रूचि के व्यवस्था अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था का प्रावधान निहित था । द्वितीय विश्व युद्ध के कारण यह व्यवस्था लागू न हो सकी।
- सर्जेण्ट योजना ने 1944 में शिक्षा के क्षेत्र विस्तृत योजना प्रस्तुत की। जिसमें प्रारम्भिक विद्यालय, उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थापित करने की व्यवस्था थी।
- माइकल मधुसूदन दत्त को पेरिस की रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की सदस्यता प्रदान की गई थी।
- सर्वप्रथम भगवद्गीता का अंग्रेजी में अनुवाद चार्ल्स विल्किंसन ने किया था।
- कालिदास की प्रसिद्ध रचना 'शकुन्तला' का पहली बार अंग्रेजी में अनुवाद सर विलियम जोन्स ने किया था।
- नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशन की स्थापना 15 अगस्त 1906 को की गयी थी ।
- बंबई में प्रथम महिला विश्वविद्यालय की स्थापना 1906 में डी के कर्वे के द्वारा की गयी थी।
- बी० जी० तिलक, डक्कन एजुकेशनल सोसायटी की स्थापना से संबंधित थी।
- बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय की स्थापना की स्थापना महान राष्ट्रवादी नेता पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा 1916 में किया गया।

भारतीय समाचार पत्रों का इतिहास:

- भारत में प्रिंटिंग प्रेस की शुरूआत सोलहवीं सदी में पुर्तगाली मिशनरियों द्वारा किया गया। गोवा के पादरियों द्वारा 1557 में पहली पुस्तक छापी थी।
- ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1684 ई0 में बम्बई में अपना - पहला प्रिटिंग प्रेस स्थापित किया था।
- जेम्स ऑगस्टस हिक्की द्वारा 1780 में प्रकाशित 'द बंगाल गजट' भारत का प्रथम अखबार माना जाता है।

- भारत में राष्ट्रीय प्रेस की स्थापना का श्रेय राजा राममोहन राय को दिया जाता है। इन्होने संवाद कौमुदी (1821), मिरात-उल अखबार 1822 फारसी का प्रकाशन कर भारत में प्रगतिशील राष्ट्रीय प्रवृत्ति के समाचार पत्रों का शुभारम्भ किया। मिरात-उल-अखबार फारसी में साप्ताहिक प्रकाशित होती थी।
- ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने 1859 में बंगाली भाषा में शोम प्रकाश का प्रकाशन किया। शोम प्रकाश एक मात्र समाचार पत्र था जिसके विरूद्ध लिटन का "वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट" लागू हुआ था। राष्ट्रवादी दृष्टिकोण वाले इस समाचार पत्र का पत्रकारिता के क्षेत्र में सबसे ऊँचा स्थान था।
- 1880 के दशक में "इंडियन मिरर" अखबार का प्रकाशन कलकत्ता से होता था।
- किसी भी भारतीय द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित पहला समाचार पत्र 1816 में प्रकाशित "बंगाल गजट" था इसका प्रकाशन गंगाधर भट्टाचार्या ने किया।
- गदर पत्र, गदर पार्टी द्वारा सैन फ्रांसिस्को से प्रकाशित होती थी । गदर पत्र एक साप्ताहिक पत्र था । गदर पत्र का प्रथम अंक उर्दू भाषा में प्रकाशित हुआ था।
- हिंदी का पहला समाचार पत्र "उदत्त मार्तंड" (30 मई 1826) को प्रकाशित हुआ था । यह कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था।
- इंडियन ओपीनियन पत्रिका का प्रथम संपादक मनसुखलाल नज़र थे।
- होमरूल पार्टी ने एक साप्ताहिक के रूप में यंग इंडिया का शुभारंभ किया था।
- भारतीयों द्वारा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित समाचार पत्र हिंदू पैट्रियाट पत्र में नील आंदोलन का जमकर समर्थन किया। हिंदू पैट्रियाट के संपादक हरिशचंद्र मुखर्जी थे।
- इंडियन नेशन पत्र का प्रकाशन पटना से होता था।
- अंग्रेजी साप्ताहिक 'वन्दे मातरम' के साथ अरविंद घोष ने अपने को संबद्ध किया।
- स्वदेशवाहिनी के संपादक के रामकृष्ण पिल्लै थे।

भारत में प्रकाशित कुछ महत्वपूर्ण पत्र

समाचार पत्र	संस्थापक
हिन्दू	जी. सुब्रमण्यम अय्यर
सुधारक	जी. के. गोखले
वॉयस ऑफ इण्डिया	दादा भाई नौरोजी
बंगाली	एस एन बनर्जी
बॉम्बे क्रॉनिकल	फिरोजशाह मेहत्ता
कॉमनवील	एनी बेसेन्ट
लीडर	मदन मोहन मालवीय
सर्चलाइट	सच्चिदानंद सिन्हा
इंडिपेंडेंट	मोती लाल नेहरू
जस्टिस	टी. एस. नायर
न्यू इण्डिया	एनी बेसेण्ट
अल हिलाल	अबुल कलाम आजाद
यंग इण्डिया	महात्मा गांधी
केसरी	लोकमान्य गंगाधर तिलक
मूक नायक	वी.आर अम्बेडकर
रोस्त गोफ्तार	दादा भाई नौरोजी
नवजीवन	एम.के. गांधी
स्वराज्य	टी प्रकाशम
प्रभात	एन.सी. केलकर

कौमी आवाज	जवाहर लाल नेहरू
सुधारक	गोपाल कृष्ण गोखले
हिन्दुस्तानी	गंगा प्रसाद वर्मा
अमृत बाजार पत्रिका	मोतीलाल घोष
वन्दे मातरम्	अरविन्द घोष
बंगवासी	जोगेन्द्र नाथ बोस
इण्डियन मिरर	देवेन्द्र नाथ टैगोर
संध्या	ब्रह्म बांधव उपाध्याय
कॉमरेड	मोहम्मद अली
न्यू इण्डिया	विपिन चन्द्र पाल
द सोशलिस्ट	एस. ए. डांगे
इन्कलाब	गुलाम हुसैन
नेटिव ओपेनियन	बी. एन. माण्डलिक

सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन

उन्नीसवीं सदी में अंग्रेजी हुकूमत का जो प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा वह उनके पूर्व के प्रभावों से भिन्न था। जहाँ भारत पर आक्रमण करने वाले अन्य विदेशियों ने भारतीय सभ्यता, संस्कृति और धर्म को स्वीकार किया तथा यहाँ के समाज के अभिन्न हिस्से बन गये, वहीं अंग्रेजी अक्रान्ता अपनी सभ्यता और संस्कृति को भारतीयों पर थोंपने में कामयाब हुए। अंग्रेजों द्वारा भारत के सभ्यता व संस्कृति में किये गये परिवर्तन के विरूद्ध 19वीं सदी में भारत में सामाजिक सुधार आन्दोलन हुए। जिसमें कुछ महत्वपूर्ण सुधार आन्दोलन इस प्रकार है –

राजाराम मोहन राय: राजा राममोहन राय प्रथम भारतीय थे जिन्होंने सबसे पहले भारतीय समाज में व्याप्त मध्ययुगीन बुराईयों के विरोध में आंदोलन चलाया। इनके प्रयासों से 19वीं शताब्दी के भारत में पुनर्जागरण का जन्म हुआ।

- राजाराम मोहन राय को 'आधुनिक भारत का पिता' कहा जाता है।
- राजा राम मोहन राय का जन्म 22 मई 1772 को बंगाल के हुगली जिले में स्थित राधा नगर में हुआ।
- राममोहन राय कई भाषाओं यथा अरबी, फारसी, संस्कृत जैसी प्राच्य भाषाओं तथा अंग्रेजी, फ्रांसीसी, लैटिन, यूनानी और हिब्रू जैसी पाश्चात्य भाषा के ज्ञाता थे।
- राम मोहन राय हिन्दू समाज की कुरीतियों, सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, वैश्यागमन, जातिवाद आदि के घोर विरोधी थे। विधवा पुनर्विवाह का भी इन्होनें समर्थन किया।
- 1809 में राजा राममोहन की फारसी भाषा की पुस्तक तुहफात-उल-मुवाहिदीन (एकेश्वरवादियों को उपहार) का प्रकाशन हुआ।
- 1818 में राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा के विरूद्ध आन्दोलन चलाय।
- 1829 में भारत के गवर्नर जनरल बैंटिक द्वारा सती प्रथा को प्रतिबंधित करने के लिए कानून को लागू करवाने में राममोहन राय ने सरकार की मदद की।
- 1820 में राममोहन राय की पुस्तक ईसा के नीति वचन शांति और खुशहाली (Precepts of jesus; the guide of peace and happiness) का प्रकाशन हुआ।
- 1822 में राय की एक और पुस्तक हिन्दू उत्तराधिकार नियम' का प्रकाशन हुआ।
- 1821 में राय अपने विचार प्रेस के माध्यम से लोगों तक पहुंचाने के उद्देश्य से संवाद कौमुदी अथवा प्रज्ञाचांद का प्रकाशन किया।
- फारसी भाषा में राय ने मिरातुल अखबार का भी प्रकाशन किया।
- 1825 में राय ने वेदांत कालेज की स्थापना करवाई।
- 20 अगस्त 1828 को राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की। ब्रह्म समाज की स्थापना का उद्देश्य था एकेश्वरवाद की उपासना, मूर्तिपूजा का विरोध, पुरोहितवाद का विरोध, अवतारवाद का खण्डन आदि।

- 1817 में कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना के लिए राय ने डेविड हेयर का सहयोग प्राप्त किया।
- राजा राममोहन राय को भारत में पत्रकारिता का अग्रदूत माना जाता है, इन्होनें समाचारपत्रों की स्वतंत्रता का समर्थन किया।
- मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने राजा राममोहन राय को 'राजा' की उपाधि प्रदान की।
- राय को इंग्लैण्ड में सम्राट से मुगल बादशाह को मिलने वाली पेंशन की मात्रा को बढ़ाने पर बात-चीत करने थी, यहीं पर ब्रिस्टले में 27 सितम्बर 1833 को राय की मृत्यु हो गई। इनकी समाधि ब्रिस्टले इंग्लैण्ड में है।
- सुभाष चन्द्र बोस ने राजा राममोहन राय को 'युगदूत' की उपाधि से सम्मानित किया था।
- राममोहन राय की मृत्यु के बाद ब्रह्म समाज की गतिविधियों का संचालन कुछ समय तक महर्षि द्वारिकानाथ टैगोर और पंडित रामचंद्र हाथों में रहा।
- देवेन्द्र नाथ टैगोर (1817 - 1905) के नेतृत्व में ब्रह्म समाज की गतिविधियाँ जारी रही है।
- देवेन्द्र नाथ टैगोर (1817 - 1905) के नेतृत्व में कलकत्ता के जोरासाकी में तत्वरंजित सभा की स्थापना हुई, इस कालान्तर में तत्वरंजिनी ही तत्व बोधिनी सभा के रूप में अस्तित्व में आई।
- देवेन्द्र नाथ ने 21 दिसम्बर 1843 को ब्रह्म समाज की सदस्यता ग्रहण की।
- 1857 में केशवचन्द्र सेन ब्रह्म समाज के सदस्य बने।
- 1861 में केशव ने 'इण्डियन मिरर' नामक अंग्रेजी के प्रथम दैनिक का संपादन किया।
- आचार्य केशव के प्रयत्नों से मद्रास में वेद समाज और महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज की स्थापना हुई है।
- 1865 ई0 में ब्रह्म समाज में पहला विभाजन हुआ देवेन्द्र नाथ टैगोर की अध्यक्षता में आदि ब्रह्म समाज की स्थापना हुई। केशवचंद्र सेन के नेतृत्व वाले गुट को 'भारतीय ब्रह्म समाज' कहा गया। आचार्य केशव के प्रयासों से 1872 में 'ब्रह्म विवाह अधिनियम' पारित हुआ आचार्य केशव ने ब्रह्म विवाह अधिनियम 1872 का उल्लंघन करते हुए अपनी अल्पायु पुत्री का विवाह कूच बिहार के राजा से कर दिया। यह 1878 में ब्रह्म समाज के द्वितीय विघटन का कारण बना।

1878 में 'साधारण ब्रह्म समाज:

- ब्रह्म समाज द्वारा मूर्ति पूजा विरोध, बाल विवाह, सती प्रथा विरोध, धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या के लिए इसने पुरोहित वर्ग का अस्वीकारा इत्यादि सिद्धान्तों को अपनाया गया।

प्रार्थना समाज:

- आचार्य केशवचन्द्र की महाराष्ट्र यात्रा से प्रभावित होकर महादेव गोविन्द रानाडे और डॉ० आत्माराम पाण्डुरंग ने 1867 में बम्बई में प्रार्थना समाज' की स्थापना की। जी. आर. भण्डारकर इस समाज के अग्रणी नेताओं में से थे।
- 1871 में रानाडे ने सार्वजनिक समाज की स्थापना की इन्हे अपनी प्रचण्ड मेघाशक्ति के कारण महाराष्ट्र का सुकरात भी कहा जाता था
- महादेव रानाडे ने शुद्धि आन्दोलन को प्रारम्भ किया, जिसे अखिल भारतीय स्वरूप प्राप्त हुआ।
- 1867 में कर्वे के सहयोग से रानाडे ने विधवा आश्रम संघ की स्थापना की।
- 1884 में रानाडे ने 'डक्कन एजूकेशन सोसाइटी' की स्थापना की। इसी सोसाइटी को कालांतर में पूना फर्ग्युसन कॉलेज नाम दिया गया। डक्कन एजूकेशन सोसाइटी के सदस्यों में तिलक, गोखले और आगरकर शामिल थे।

वेद समाज:

- केशवचन्द्र सेन की मद्रास यात्रा के समय एक तरूण युवक के श्रीधरलू नायडू ने मद्रास में वेद समाज की स्थापना की।
- 1871 में वेदसमाज 'दक्षिण के ब्रह्मसमाज' के रूप में अस्तित्व में आया।

आर्यसमाज और स्वामी दयानंद सरस्वती:

- 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती ने बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। कुछ वर्ष पश्चात् आर्य समाज का मुख्यालय 'लाहौर में स्थापित किया गया।
- स्वामी दयानंद सरस्वती के बचपन का नाम मूलशंकर था। इन्हें भारत का मार्टिन लूथर कहा जाता है।
- दयानन्द सरस्वती ने 'वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया। इन्हानें वेदों को शाश्वत् अपरिवर्तनीय धार्मातीत तथा दैवीय माना।
- दयानन्द ने शुद्धि आंदोलन चलाया इसके अन्तर्गत हिन्दू धर्म का परित्याग कर अन्य धर्म अपनाने वाले लोगों के लिए पुनः वापसी के द्वार खोल दिये गये।
- 1822 में दयानंद ने 'गौ रक्षिणी सभा' की स्थापना की।
- स्वामी दयानंद द्वारा निम्न रचनायें की गयी –
  1. सत्यार्थ प्रकाश (1874 संस्कृत)
  2. पाखण्ड खण्डन (1866)
  3. वेदभाष्य भूमिका (1876)
  4. ऋग्वेद भाष्य् (1877)
  5. अद्वैत मत खण्डन (1873)
  6. पंच महायज्ञ विधि (1875)
  7. वल्लभाचार्य मत खण्डन (1875)
- वेलेन्टाइन चिरोल ने अपनी पुस्तक इण्डियन अनरेस्ट में आर्य समाज को भारतीय अशान्ति का जन्मदाता' कहा।

स्वामी विवेकानन्द तथा रामकृष्ण मिशन:

- स्वामी विवेकानन्द रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे।
- 11 सितम्बर 1893 में शिकागो धर्म सम्मेलन में बोलते हुए स्वामी जी ने अद्भूत भाषण दिया ।
- 1897 में अमरीकी प्रवास से वापस आने के बाद स्वामी जी ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। रामकृष्ण मिशन का कलकत्ता के वेल्लूर और अल्मोड़ा के मायावती नामक स्थानों पर मुख्यालय खोला।

थियोसॉफिकल सोसाइटी और एनी बेसेन्ट:

- 1875 ई0 में मैडम ब्लावत्सकी तथा कर्नल आल्कॉट ने न्यूयॉर्क में थियोसॉफिकल सोसायटी की स्थापना की। इसका उद्देश्य सभी प्राच्य धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया है।
- 1882 ई0 में थियोसॉफिकल सोसाइटी का आड्यार (मद्रास) में अन्तर्राष्ट्रीय कार्यालय खोला गया।
- 1888 में श्रीमती एनी बेसेन्ट इस सोसाइटी की सदस्य बनीं, 1893 में एनी बेसेंट भारत आयी।
- आल्कॉट की मृत्यु के बाद 1907 ई0 में एनी बेसेन्ट थियोसॉफिकल सोसाइटी की अध्यक्ष बनीं।
- भारत में शिक्षा के क्षेत्र में विकास के लिए एनी जी ने बनारस में 1898 में सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जो 1916 में मदनमोहन मालवीय जी के प्रयासों से 'बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय' बना।

अन्य धार्मिक सुधार आंदोलन:

- धर्म सभा की स्थापना 1830 में राधाकान्त देव ने की थी, यह एक रूढ़िवादी संस्था थी, इस संस्था के लोग सामाजिक, धार्मिक स्तर को यथास्थिति बनाये रखने के समर्थक थे।
- लोकहितवादी के नाम से गोपाल हरि देशमुख प्रसिद्ध हुए। व्यवसाय से न्यायाधीश श्री देशमुख को 1880 में गवर्नर जनरल की काउंसिल में सदस्य बनाया गया। इन्होनें पाश्चात्य शिक्षा और लोगों को आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया।
- देव समाज की स्थापना 1887 में शिवनाराण अग्निहोत्री ने लाहौर में किया। इस समाज के उपदेश देवशास्त्र पुस्तक में संकलित है।
- राधास्वामी आंदोलन की स्थापना शिवदयाल साहिब अथवा स्वामी महाराज (तुलसीराम) द्वारा 1861 में आगरा में किया गया।

- मद्रास हिन्दू संघ की स्थापना वीरेसलिंगम पुत्तलू द्वारा विधवा महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए।
- 1892 में वीरेस लिंगम तथा आर वेंकटरत्नम् द्वारा मद्रास में हिन्दू समाज सुधार संघ की स्थापना की गई।
- सेवासदन नामक सामाजिक सुधार तथा मानवतावादी संगठन की स्थापना 1885 में बहराम की मालाबारी (पारसी) ने की।
- भारतीय सेवक समाज की स्थापना 1915 ई0 में समाज सुधार के उद्देश्य से गोपालकृष्ण गोखले ने की।
- भारतीय सामाजिक सम्मेलन 1887 में एम. जी. रानाडे और रघुनाथ राय ने की। इस आंदोलन ने बाल विवाह को रोकने हेतु प्रतिज्ञा आंदोलन की शुरूआत की।
- समाज सेवा संघ की स्थापना 1911 में एन. एम. जोशी ने की। इस संघ के सदस्यों में हृदयनाथ कुंजरू शामिल थे। जिन्हानें 1914 में इलाहाबाद में सेवा समिति की स्थापना की।
- रहनुमायें मज्दयासन सभा पारसी सुधार आंदोलन से जुड़ा था इस संस्था की स्थापना 1851 में नौरोजी फरदोनजी, दादा भाई नौरोजी तथा एस. एस. बंगाली ने की। रहनुमायें मज्दयासन सभा ने राफ्त गोफ्तार (सत्यवादी) नामक पत्रिका का प्रकाशन किया।
- 1873 ई0 में सत्यशोधन समाज की स्थापना महाराष्ट्र में ज्योतिबा फूले ने किया। सत्यशोधन समाज पिछड़े वर्गों का उत्थान कार्यक्रम था।
- महाराष्ट्र में विधवा पुनर्विवाह हेतु अभियान का नेतृत्व विष्णु परशुराम पंडित ने की थी।
- यदि भगवान अस्पृश्यता को सहन करते हैं, तो मैं इन्हें कभी भगवान नहीं मानूंगा यह कथन बाल गंगाधर तिलक ने दिया था।
- दार-उल-उलूम की स्थापना मौलाना शिब्ली नुमानी ने की थी।
- देवबंद आन्दोलन यू.पी. (संयुक्त प्रांत) में प्रारंभ हुआ था 1866 ई0 में।
- 1924 का बंगाल का 'तारकेश्वर आंदोलन' मंदिरों में भ्रष्टाचार के विरूद्ध था।
- हाली पद्धति बंधुआ मजदूर से संबंधित थी।
- द एज ऑफ कांसेंट एक्ट 1891 ई0 में पारित हुआ।
- 1856 ई0 में धार्मिक असुविधा कानून तथा हिन्दू विधवा पुनर्विवाह कानून पारित हुआ।
- ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह के लिए - संघर्ष किया और उसे कानूनी रूप से वैध बनाने में सफलता प्राप्त की।
- 1829 ई0 में विलियम बैंटिक ने सती प्रथा को कानूनी अपराध घोषित कर दिया।
- 1843 के एक्ट 5 के द्वारा गुलामी (दासता) से मुक्ति का प्रावधान किया गया। दास प्रथा को अवैध घोषित कर दिया।
- 1872 में नेटिव मैरिज एक्ट को पारित किया गया।
- बाल विवाह प्रथा को नियंत्रित करने हेतु 1872 के सिविल मैरिज एक्ट ने लड़कियों की विवाह की आयु न्यूनतम 14 वर्ष कर दी।
- शारदा एक्ट 1930 का बाल विवाह से संबंधित था जिसके तहत लड़कियों की आयु 14 वर्ष एवं लड़कों की 18 वर्ष निर्धारित की गयी।
- शिशुवध प्रथा 13वीं सदी में राजपूतों और बंगालियों में प्रचलित था। 1785 के बंगाल नियम 21 और 1804 के नियम द्वारा इस क्रूर अमानवीय प्रथा को समाप्त करने का प्रयास किया गया।

सामाजिक सुधार अधिनियम:

अधिनियम	वर्ष	गर्वनर जनरल	विषय
स्ती प्रथा प्रतिबंध	1829	लार्ड विलियम बैंटिक	सती प्रथा पर पूर्ण प्रतिबंध
शिशुवध प्रतिबंध	1785-1804	वेलेजली	शिशु हत्या पर प्रतिबंध

हिन्दू विधवा पुर्नविवाह	1856	लार्ड कैनिंग	विधवा विवाह की अनुमति
एज ऑफ कंसेंट एक्ट	1891	लैंसडाउन	विवाह की आयु 12 वर्ष
दास प्रथा पर प्रतिबंध	1943	एलनबरो	1833 के अधीनियम द्वारा 1843 को प्रतिबंधित किया गया।

धार्मिक सामाजिक आन्दोलन:

संस्था	स्थान	संस्थापक
आत्मीय सभा	बंगाल	राजा राममोहन राय
ब्रह्म समाज	बंगाल	राजा राममोहन राय
आदि बा समाज	कलकत्ता	केशव चंद्र सेन
साधारण बह्म समाज	कलकत्ता	विश्वनाथ शास्त्री
देवबंद स्कूल	सहारनपुर (यू०पी०)	मुहम्मद कासिम व ननौत्वी व रशीद अहमद गंगोली
अहमदिया आंदोलन	कादिया (पंजाब)	गुलाम अहमद
अखिल भारतीय अस्पृश्यता निवारण संघ	1933	महात्मा गाँधी
डिप्रेस्ड क्लासेज मिशन सोसाइटी	1906	बी. आर. शिन्दे
आत्मसम्मान आंदोलन	दक्षिण भारत	ई०वी० रामास्वामी
अखिल भारतीय दलित वर्ग	1924	बी. आर. अम्बेडकर

मुस्लिम सुधार आंदोलन:

- 19वीं सदी में इस्लाम धर्म में विद्यमान कुरीतियों को दूर करने के उद्देश्य से अनेक मुस्लिम सुधारवादी आंदोलन अस्तित्व में आये।
- अलीगढ़ आंदोलन सर सैय्यद अहमद खाँ के नेतृत्व में चलाये गये आंदोलन को ही अलीगढ़ आंदोलन के नाम से जाना जाता है।
- अहमदिया आंदोलन की स्थापना 1889 ई0 में मिर्जा गुलाम अहमद (1838-1909) ने किया। इस आंदोलन का उद्देश्य मुस्लमानों में आधुनिक बौद्धिक विकास के सन्दर्भ में धर्मोपदेश और नियमों को उदार बनाना।
- देवबंद आंदोलन 1867 में उ0प्र0 में मुहम्मद कासिम ननौत्वी एवं रशीद अहमद गंगोहो द्वारा प्रारम्भ किया गया।